ई–संस्करण, अंक 6

Room to Read®
World Change Starts with Educated Children

गपशप

नमस्कार,
आशा है कि आप और आपका परिवार अच्छे से होंगे। जैसा कि आप जानते हैं हम सभी लॉकडाउन में हैं और अपने–अपने घर पर हैं, हमने सोचा कि अपने नियमित समाचार पत्र गपशप का ई–संस्करण लाया जाए। हम आपको लॉकडाउन की इस अवधि के दौरान समय–समय पर इस तरह के ई–गपशप भेजते रहेंगे। आशा है कि आपको इसे पढ़कर अच्छा लगेगा। आप इसे अपने दोस्तों, परिवार के सदस्यों और आपके अनुसार जिन्हें भी इन लेखों को पढ़ने में मज़ा आए उनके साथ साझा कर सकते हैं।
घर पर रहें। सुरक्षित रहें।

रूम टू रीड परिवार

हिंदी सिनेमा जगत का शानदार इतिहास

बॉलीवुड मनोरंजन के मामले में न केवल भारत में ही मशहूर है बल्कि विदेशों में भी हमारी फिल्मे बहुत देखी जाती है। लेकिन क्या आप सब जानती हो कि यह सब कैसे शुरू हुआ। तो चलिए, आज जानते है कि बॉलीवुड का इतिहास क्या है और कैसे इसका सफर शुरू हुआ।

राजा हरीशचन्द–1913

दादासाहब फाल्के को हिंदी सिनेमा जगत का जनक कहा जाता है। उनकी पहली पूरी फीचर फिल्म राजा हरीशचन्द्र 1913 में रिलीज हुई थी। और यह एक मूक यानि बिना आवाज़ वाली फिल्म थी।

इस फिल्म में दादासाहेब न केवल निर्माता थे बल्कि उन्होंने फिल्म को डायरेक्ट किया था और कैमरा भी किया था, और तो और मेकअप से लेकर एडिटर का काम भी उन्होंने स्वयम् ही किया था। 1913 से लेकर 1918 के बीच दादासाहेब ने कुल मिलकर 23 फिल्मे बनाई और फिर धीरे धीरे हिंदी सिनेमा दर्शकों के बीच जगह बनाने लगी।

पोस्टर बोलते है

आप सबने सिनेमा घर में लगे बड़े–बड़े फिल्मी पोस्टर तो देखे होंगे। एक कागज पर पूरी फिल्म की कहानी दिखा देना किसी कमाल से कम नहीं है। ठीक कहा न मैंने? हम पोस्टर देखकर अनुमान लगाते हैं कि फिल्म कैसी होगी। दरअसल यह कला का ही एक हिस्सा हैं, यह दर्शकों के साथ बातचीत का माध्यम हैं। फिल्मी पोस्टरों का सफर बहुत दिलचस्प रहा है। शुरू में पोस्टर हाथ से, रंगों और कूची की मदद से बनाए जाते थे।

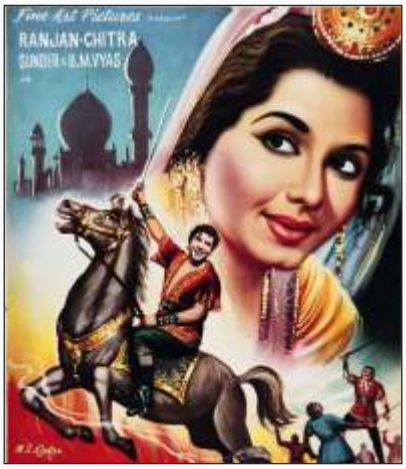

दादा साहब ने पहली फिल्म राजा हरिश्चंद्र के प्रचार प्रसार के लिए हाथ से पोस्टर बनाए थे। उन्होंने पोस्टर के ऊपर हाथ से निर्देशक, निर्माता लेखक और कलाकारों के नाम लिखे। यह फिल्मी पोस्टर की शुरुआत थी।

आपको पता है, एक ही फिल्म के कई अलग अलग पोस्टर बनते थे। यह सभी पोस्टर मिलकर फिल्म की कहानी बनाते थे। कई पोस्टर तो ऐसे भी देखने को मिलते हैं जिनका फिल्म में दृश्य भी नहीं होते। मुगल–ए–आजम फिल्म के ऐसे कई पोस्टर देखने को मिलते हैं जो फिल्म के दृश्य में है ही नहीं। दरअसल चित्रकार एम एफ हुसैन ने कई पोस्टर इस फिल्म से प्रेरित होकर बनाए।

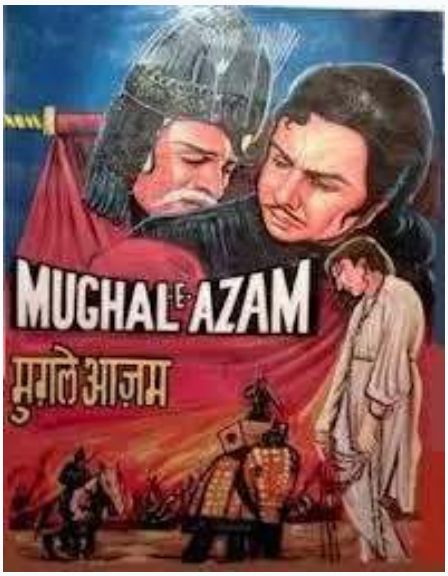

समय के साथ पोस्टर बनाने का तरीका बदल चुका है। अब डिजिटल तकनीक से पोस्टर बनने लगे हैं। हाथ से बनाए जाने वाले पोस्टरों का चलन खत्म हो गया है पर अनेक फिल्मों के हाथ से बने पोस्टरों की स्मृति आज भी बनी हुई है।

आओ जानें फिल्म निर्माण

फिल्म निर्माण जिसे फिल्म मेकिंग भी कहते हैं, चित्रों द्वारा कहानी कहने की कला है। कैमरे से फिल्म शूट होती हैं। फिल्म निर्माण में स्क्रिप्ट होती है, चरित्र होते हैं। फिल्म का अपना देश–काल होता है, दृश्य होते हैं, ध्वनियों का दृश्यों के साथ मिलान होता है, स्पेशल इफेक्ट्स होते हैं और गीत–संगीत होता है। फिल्मों में सृजनात्मकता और तकनीक का अनोखा मेल होता है।

आज फिल्मों में नई–नई तकनीकों का प्रयोग किया जा रहा है। आज सिनेमा सामाजिक और सांस्कृतिक बदलाव के वाहक के रूप में अपनी भूमिका का निर्वाह कर रहा है। इसके पास लोगों को बदलने की जबरदस्त ताकत होती है। इसका प्रशिक्षण अगर आपके पास है तो आपका तकनीकी पक्ष बहुत मजबूत हो सकता है। कॅरियर के लिहाज से फिल्मी दुनिया में काफी संभावनाएं मौजूद हैं।

इस क्षेत्र में ज्यादातर कोर्स स्नातक के बाद कर सकते हैं पर कुछ कोर्स में दाखिला लेने के लिए न्यूनतम योग्यता बारहवीं है। पोस्ट ग्रेजुएट कोर्स के लिए न्यूनतम 40 प्रतिशत अंकों के साथ स्नातक होना जरूरी है। कुछ अन्य तकनीकी कोर्सों में दाखिले के लिए साइंस विषय से स्नातक होना चाहिए।